।। श्री गणेशाय नमः ।।

हिन्दी पाक्षिक Fort Nightly

बात हिन्दुस्तान की

Baat Hindustan Ki

R N I No.: WBHIN / 2021 / 84049

• विक्रम संवत 2083 आसाढ़ शुक्ल पक्ष- द्वितीया, 16-31 जुलाई 2026, 16-31 July 2026, • वर्ष 6 (Year-6), • अंक 6 • पृष्ठ 4 (Page-4) • मूल्य 2 (Price 2/-)

जब भगवान स्वयं निकलते हैं भक्तों के द्वार...

पुरी की विश्वविख्यात श्रीजगन्नाथ रथ यात्रा

विशेष संवाददाता पुरी (ओडिशा) : आषाढ़ शुक्ल द्वितीया का दिन पुरी की विशाल ग्रैंड रोड पर जनसागर उमड़ पड़ा है। चारों ओर 'जय जगन्नाथ' के उद्घोष गूंज रहे हैं। लाखों श्रद्धालुओं की आंखें उस ऐतिहासिक क्षण का इंतजार कर रही हैं, जब भगवान श्रीजगन्नाथ, उनके अग्रज बलभद्र और बहन सुभद्रा अपने-अपने भव्य रथों पर विराजमान होकर श्रीमंदिर से बाहर निकलेंगे। जैसे ही रथ आगे बढ़ता है, श्रद्धा का सैलाब उमड़ पड़ता है और भक्त रथ की रस्सी को स्पर्श करने के लिए व्याकुल हो उठते हैं। यह केवल एक धार्मिक यात्रा नहीं, बल्कि सनातन संस्कृति का वह विराट उत्सव है, जहां भगवान स्वयं अपने भक्तों के बीच आते हैं। पुरी की रथ यात्रा विश्व की सबसे प्राचीन और सबसे विशाल धार्मिक यात्राओं में गिनी जाती है। सदियों से चली आ रही यह परंपरा आज भी करोड़ों लोगों की आस्था का केंद्र बनी हुई है।

भगवान मंदिर से बाहर क्यों आते हैं?

भारत के अधिकांश मंदिरों में श्रद्धालु भगवान के दर्शन के लिए मंदिर पहुंचते हैं, लेकिन पुरी में वर्ष में एक बार परंपरा उलट जाती है। यहां भगवान स्वयं अपने भक्तों के दर्शन देने मंदिर से बाहर निकलते हैं। मान्यता है कि जो लोग किसी कारणवश श्रीमंदिर में प्रवेश नहीं कर पाते, उन्हें भी भगवान का आशीर्वाद प्राप्त हो। इसी भावना के साथ भगवान जगन्नाथ नगर भ्रमण पर निकलते हैं। यही कारण है कि इस यात्रा को 'लोकमंगल की यात्रा' भी कहा जाता है।

श्रीकृष्ण की लीला से जुड़ी है परंपरा

पुराणों के अनुसार भगवान श्रीकृष्ण की बहन सुभद्रा ने द्वारका नगरी देखने की इच्छा व्यक्त की थी। तब भगवान श्रीकृष्ण और बलराम उन्हें रथ पर बैठाकर नगर भ्रमण कराने निकले। यही परंपरा आगे चलकर पुरी की रथ यात्रा के रूप में प्रतिष्ठित हुई। एक अन्य मान्यता के अनुसार भगवान अपनी मौसी गुंडिचा देवी के घर सात दिनों के प्रवास पर जाते हैं। भक्त इस यात्रा को भगवान और भक्त के आत्मीय मिलन का पर्व मानते हैं।

तीन रथ... तीन दिव्य स्वरूप

हर वर्ष तीन नए रथ तैयार किए जाते हैं। इनका निर्माण केवल पवित्र नीम सहित चयनित लकड़ियों से किया जाता है।

- भगवान श्रीजगन्नाथ का रथ- 16 पहिए, लगभग 45 फीट ऊंचा तालध्वज।
- भगवान बलभद्र का रथ - 14 पहिए, लगभग 44 फीट ऊंचा।
- माता सुभद्रा का रथ- 12 पहिए, लगभग 43 फीट ऊंचा।

विशेष बात यह है कि हर वर्ष नए रथ बनाए जाते हैं। अक्षय तृतीया से शुरू होकर सैकड़ों पारंपरिक कारीगर कई सप्ताह तक इनके निर्माण में जुटे रहते हैं।

राजा भी बनता है भगवान का सेवक

रथ यात्रा की सबसे अनूठी परंपराओं में से एक है 'छेरा पहंरा'। इसमें पुरी के गजपति महाराज स्वर्ण झाड़ू से तीनों रथों की सफाई करते हैं। यह परंपरा संदेश देती है कि भगवान के सामने कोई राजा या प्रजा नहीं, सभी समान हैं। सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है।

रथ की रस्सी खींचने का सौभाग्य

जब लाखों श्रद्धालु रथ की रस्सी पकड़कर उसे खींचते है तो पूरा पुरी 'हरि बोल' और 'जय जगन्नाथ' के जयघोष से गूंज उठता है। धार्मिक मान्यता है कि श्रद्धापूर्वक रथ खींचने से व्यक्ति के जीवन के कष्ट दूर होते हैं और उसे भगवान की विशेष कृपा प्राप्त होती है।

क्यों अलग है भगवान जगन्नाथ का स्वरूप?

भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा की प्रतिमाओं के हाथ-पैर पूर्ण विकसित नहीं है। लोकमान्यता के अनुसार देवशिल्पी विश्वकर्मा प्रतिमाओं का निर्माण कर रहे थे, लेकिन निर्धारित समय से पहले द्वार खुल जाने के कारण मूर्तियां अधूरी रह गई। भगवान ने उसी स्वरूप में विराजमान रहने की इच्छा व्यक्त की। तभी से उनकी पूजा इसी दिव्य रूप में होती है।

भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा केवल आस्था का पर्व नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति के उस शाश्वत संदेश की जीवंत अभिव्यक्ति है, जिसमें सेवा, समानता, करुणा और मानवता सर्वोपरि हैं। जब भगवान स्वयं अपने भक्तों के बीच आते हैं, तब यह संदेश और भी प्रबल हो जाता है कि धर्म का वास्तविक स्वरूप प्रेम, समरसता और लोककल्याण है। यही कारण है कि सदियों पुरानी यह परंपरा आज भी पूरे विश्व को भारतीय संस्कृति की महानता से परिचित करा रही है। 'जय जगन्नाथ'।

रथ यात्रा एक नजर में

- स्थान : श्रीजगन्नाथ धाम, पुरी (ओडिशा)
- तिथि : आषाढ़ शुक्ल द्वितीया
- यात्रा मार्ग : श्रीमंदिर से गुंडिचा मंदिर
- दूरी : लगभग 3 किलोमीटर
- देवता : भगवान जगन्नाथ, बलभद्र एवं सुभद्रा
- भागीदारी : लाखों श्रद्धालु
- पहचान : विश्व की सबसे बड़ी धार्मिक यात्राओं में शामिल

महाप्रसाद : जहां मिट जाते हैं सभी भेद

पुरी श्रीमंदिर का महाप्रसाद विश्वप्रसिद्ध है। यहां प्रतिदिन हजारों श्रद्धालु एक साथ बैठकर प्रसाद ग्रहण करते हैं। जाति, वर्ग और ऊंच-नीच का कोई भेद नहीं। यही भगवान जगन्नाथ की सबसे बड़ी शिक्षा है। समानता और समरसता।

विश्वभर में गूंजता है 'जय जगन्नाथ'

आज रथ यात्रा केवल पुरी तक सीमित नहीं रही। भारत के अनेक राज्यों के साथ-साथ अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, मॉरीशस, नेपाल, बांग्लादेश और यूरोप के कई देशों में भी भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा निकाली जाती है। यह भारतीय संस्कृति की वैश्विक पहचान बन चुकी है।

मुख्यमंत्री ने स्वास्थ्य भवन का औचक दौरा किया

कोलकाता : मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने कोलकाता के साल्टलेक स्थित राज्य स्वास्थ्य विभाग के मुख्यालय स्वास्थ्य भवन का औचक दौरा किया और मरीजों की देखभाल में सुधार के उद्देश्य से शुरू की गई अस्पताल निगरानी प्रणाली की प्रगति की समीक्षा की। मुख्यमंत्री ने कहा कि सीसीटीवी आधारित निगरानी प्रणाली शहर के 15-16 सरकारी अस्पतालों और कुछ जिलों में पहले से ही लागू है। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया कि इस सुविधा का विस्तार 30 जुलाई तक सभी अनुमंडलीय अस्पतालों में भी किया जाए। निगरानी सुविधा का निरीक्षण करने के बाद मुख्यमंत्री ने राज्य के स्वास्थ्य मंत्री डा शारद्वत मुखर्जी और विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक भी की। बैठक के बाद मुख्यमंत्री ने पत्रकारों से बातचीत में मुख्यमंत्री ने कहा कि मैंने निर्देश दिया है कि लाइव निगरानी प्रणाली का विस्तार 30 जुलाई तक सभी अनुमंडलीय अस्पतालों में किया जाए। यह निगरानी केवल आपातकालीन वार्ड और ओपीडी तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि इसमें रसोई, पार्किंग क्षेत्र, उचित मूल्य वाली दवा दुकानें और जनऔषधि केंद्र भी शामिल होंगे ताकि पारदर्शिता, स्वच्छता और मरीजों की बेहतर देखभाल सुनिश्चित की जा सके। उन्होंने यह भी कहा कि इससे सरकारी अस्पतालों में दलालों की गतिविधियों पर रोक लगेगी। उन्होंने यह भी घोषणा की कि कोलकाता स्थित राज्य के सबसे बड़े सरकारी एसएसकेएम अस्पताल में इस साल दुर्गा पूजा से पहले 250 बिस्तर (बेड) बढ़ाए जाएंगे। उन्होंने अधिकारियों को अस्पताल की आइसीयू क्षमता को भी 112 बिस्तरों से बढ़ाकर 200 बेड करने का निर्देश दिया। मुख्यमंत्री ने अस्पताल की 'बर्न यूनिट' को भी मजबूत करने की बात कही, जिसकी मौजूदा क्षमता केवल 60 बिस्तरों की है। मुख्यमंत्री ने आपातकालीन स्वास्थ्य सेवाओं के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने की जरूरत पर भी जोर दिया और ट्रामा सेंटरों की क्षमता बढ़ाने को कहा ताकि वे एक साथ कम से कम 250 मरीजों को प्राथमिक उपचार उपलब्ध करा सकें। उन्होंने कहा कि बड़ी दुर्घटनाओं और आपात स्थितियों को देखते हुए ऐसी सुविधा जरूरी है। उन्होंने यह भी घोषणा की कि राज्य सरकार ने न्यूटाउन में 2,000 बिस्तरों वाले अंतरराष्ट्रीय स्तर के अस्पताल की स्थापना के लिए अदाणी समूह के साथ समझौता किया है। इसमें 1,000 बिस्तर गरीब मरीजों के लिए आरक्षित रहेंगे। उन्होंने कहा कि सरकारी जमीन पर बने निजी अस्पतालों ने भी अपनी कुल बिस्तर क्षमता का 10 प्रतिशत हिस्सा आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के मरीजों के लिए निःशुल्क आरक्षित करने पर सहमति जताई है। मुख्यमंत्री ने उल्लेख किया कि मरीजों के कल्याण में सुधार के उद्देश्य से उनकी सरकार ने हाल में पेश पहले राज्य बजट में सरकारी अस्पतालों में मरीजों के लिए तीन समय के भोजन पर प्रतिदिन होने वाले खर्च को 54 रुपये से बढ़ाकर 110 रुपये कर दिया है। उन्होंने बताया कि स्कूली बच्चों, गर्भवती महिलाओं और पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए पोषण योजनाओं के तहत दी जाने वाली राशि भी बढ़ाई गई है।

आयुष्मान भारत से वंचित लोगों को मिलेगा मुख्यमंत्री स्वास्थ्य बीमा योजना का लाभ : शुभेंदु अधिकारी

कोलकाता : मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने मुर्शिदाबाद जिले के रेजिनगर में आयोजित जनसभा से बड़ी घोषणा की कि आयुष्मान भारत योजना का लाभ नहीं पाने वाले लोगों को मुख्यमंत्री स्वास्थ्य बीमा योजना के तहत पांच लाख रुपये तक का स्वास्थ्य बीमा दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि राज्य में आयुष्मान भारत योजना के लिए आवेदन प्रक्रिया चल रही है और करीब साढ़े छह करोड़ लोगों को इस योजना का लाभ मिलेगा। शुभेंदु ने आश्वस्त किया कि जिन लोगों का नाम इस योजना में शामिल नहीं होगा, उन्हें मुख्यमंत्री स्वास्थ्य बीमा योजना के तहत पांच लाख रुपये तक की बीमा सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ऐसी व्यवस्था भी करेगी, जिससे इस स्वास्थ्य बीमा योजना का लाभ दूसरे राज्यों में इलाज के दौरान भी मिल सके।

'फलता की तरह रेजीनगर हमें दीजिए, विकास की कोई कमी नहीं रहने देंगे'

मुख्यमंत्री ने रेजिनगर की सभा से उपचुनाव का भी बिगुल फूंकते हुए विधानसभा में भाजपा के विधायकों की संख्या 209 तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा। उन्होंने कहा कि नंदीग्राम की जीत तय है, जबकि रेजिनगर का परिणाम भाजपा के लिए निर्णायक साबित होगा। शुभेंदु ने मुस्लिम बहुल इस विधानसभा क्षेत्र के लोगों से रेजिनगर में भाजपा को समर्थन देने की अपील की। उन्होंने वादा किया कि दक्षिण 24 परगना जिले के फलता की तरह यदि रेजिनगर से भाजपा जीतती है तो क्षेत्र में विकास की कोई कमी नहीं रहने देंगे।

टाक टू मेयर की जगह अब 'मुखोमुखी', हर मंगलवार को लोगों की शिकायतें सुनेंगी मंत्री अग्निमित्रा पाल

कोलकाता : कोलकाता नगर निगम (केएमसी) में निर्वाचित मेयर बोर्ड भंग होने के बाद नागरिक सेवाओं को सुचारु बनाए रखने के लिए राज्य की नवगठित भाजपा सरकार ने नई पहल की है। शहरी विकास व नगरपालिका मामलों की मंत्री अग्निमित्रा पाल मंगलवार से 'मुखोमुखी' नामक विशेष टोल-फ्री हेल्पलाइन शुरू करेंगी। इसके माध्यम से कोलकाता नगर निगम क्षेत्र के निवासी सीधे अपनी शिकायतें, समस्याएं और सुझाव मंत्री तक पहुंचा सकेंगे। इससे पहले तृणमूल कांग्रेस संचालित बोर्ड के दौरान तत्कालीन मेयर फिरहाद हकीम टाक टू मेयर नाम से सप्ताह में एक दिन फोन पर लोगों की शिकायतें सुनते थे। इसकी जगह अब नई सरकार 'मुखोमुखी' नाम से हेल्पलाइन सेवा शुरू करने जा रही है। राज्य सचिवालय नवान्न के अनुसार, यह सेवा प्रत्येक मंगलवार दोपहर तीन बजे से चार बजे तक उपलब्ध रहेगी। इसके लिए टोल-फ्री नंबर 18002035123 जारी किया गया है। इस दौरान नागरिक जलापूर्ति, सफाई, सड़क, रोशनी सहित नगर सेवाओं से जुड़ी शिकायतें और विकास संबंधी सुझाव दर्ज करा सकेंगे। प्राप्त शिकायतों को संबंधित प्रशासनिक अधिकारियों तक पहुंचाकर आवश्यक कार्रवाई की जाएगी। राज्य सरकार ने पिछले महीने कोलकाता के मेयर पद से

तृणमूल कांग्रेस के वरिष्ठ नेता फिरहाद हकीम के इस्तीफे के बाद नगर निगम आयुक्त स्मिता पांडे को प्रशासक नियुक्त किया है। निगम प्रशासक का कहना है कि निर्वाचित बोर्ड नहीं होने के बावजूद नागरिक सेवाओं में किसी प्रकार की बाधा नहीं आने दी जाएगी। इसी उद्देश्य से आम लोगों और प्रशासन के बीच सीधे संवाद की व्यवस्था की गई है। गौरतलब है कि मेयर रहते हुए फिरहाद हकीम ने 'टाक टू मेयर' कार्यक्रम शुरू किया था, जिसके तहत वह सप्ताह में एक दिन नागरिकों से सीधे बातचीत कर उनकी समस्याएं सुनते थे। विधानसभा चुनाव की घोषणा के बाद यह कार्यक्रम स्थगित कर दिया गया था और उनके इस्तीफे के बाद बंद हो गया।

सरकारी सूत्रों के अनुसार, 'मुखोमुखी' को इसी व्यवस्था के नए स्वरूप के रूप में देखा जा रहा है। सरकार का कहना है कि जब तक नगर निगम का नया निर्वाचित बोर्ड कार्यभार नहीं संभाल लेता, तब तक नगर विकास विभाग इसी तरह के माध्यमों से नागरिकों की शिकायतों के समाधान का प्रयास करता रहेगा।

सरकारी अस्पताल में मरीज को एक्सपायरी 'सलाइन' चढ़ाने का आरोप, बंगाल सरकार ने जांच के आदेश दिए

कोलकाता : बंगाल में एक मरीज के स्वजनों द्वारा मरीज को एक सरकारी मेडिकल कालेज एवं अस्पताल में उपयोग की अवधि समाप्ति वाली (एक्सपायरी) सलाइन चढ़ाए जाने का आरोप लगाने के बाद राज्य स्वास्थ्य विभाग ने गुरुवार को मामले की जांच के आदेश दिए। इसके साथ ही स्वास्थ्य विभाग ने अस्पतालों में निगरानी व्यवस्था को और कड़ा करने की घोषणा की है। राज्य के स्वास्थ्य मंत्री डा शारद्वत मुखर्जी ने कहा कि इस संबंध में मेदिनीपुर मेडिकल कालेज एवं अस्पताल से रिपोर्ट तलब की गई है और ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए आवश्यक सुधारात्मक कदम उठाए जाएंगे। इससे पहले जनवरी 2025 में भी इस मेडिकल कालेज अस्पताल में एक मरीज को कथित तौर पर उपयोग की अवधि समाप्ति वाला सलाइन चढ़ाए जाने को लेकर विवाद हुआ था। स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि स्वास्थ्य अधिकारियों से मानक संचालन प्रक्रियाओं (एसओपी) का पालन किए जाने की अपेक्षा की जाती है और विभाग इसका अनुपालन सुनिश्चित करेगा। ऐसी चूक दोबारा न हो, इसके लिए साप्ताहिक जांच की जाएगी।

मरीज की पहचान मेदिनीपुर शहर के विद्यासागरपल्ली निवासी मानसी दे के रूप में हुई है। उन्हें स्ट्रोक आने के बाद पांच जुलाई को अस्पताल में भर्ती कराया गया था। स्वजनों के अनुसार, आठ जुलाई को अंतःशिरा लवणीय घोल (आइवी सलाइन) चढ़ाए जाने के दौरान उन्होंने सीने में जलन की शिकायत की। उनके बेटे का आरोप है कि बोतल की जांच करने पर उस पर समाप्ति तिथि इस वर्ष मार्च अंकित थी। उन्होंने कहा कि मेरी मां को स्ट्रोक के अलावा कई अन्य स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं भी हैं। मैं जानना चाहता हूं कि उन्हें ऐसी सलाइन कैसे चढ़ा दी गई।

इसके बाद मरीज को गहन चिकित्सा कक्ष (आइसीयू) में स्थानांतरित कर दिया गया और अस्पताल प्रशासन ने मामले की जांच शुरू कर दी। अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक एवं उप-प्राचार्य इंद्रनील सेन ने कहा कि मरीज की हालत स्थिर है और उस पर लगातार नजर रखी जा रही है।

बंगाल में 50 हजार सफाई कर्मियों को मिलेंगे विशेष सुरक्षा किट : शुभेंदु

कोलकाता : बंगाल सरकार ने सफाई कर्मियों की सुरक्षा और स्वच्छता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 'स्वच्छ कवच' कार्यक्रम की शुरुआत की। पायलट परियोजना के रूप में शुरू किए गए इस अभियान के तहत राज्य के 50 हजार सफाई कर्मियों को विशेष सुरक्षा किट उपलब्ध कराने का लक्ष्य रखा गया है। कोलकाता के अलीपुर स्थित उत्तीर्ण सभागार में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने इस अभियान का शुभारंभ करते हुए कहा कि सफाई कर्मियों के योगदान की सराहना की। मुख्यमंत्री ने कहा कि स्वच्छता केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का सामाजिक दायित्व है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के स्वच्छ भारत अभियान ने देश में स्वच्छता के प्रति व्यापक जनजागरूकता पैदा की है और राज्य सरकार भी उसी सोच को आगे बढ़ा रही है। कार्यक्रम में शहरी विकास मंत्री अग्निमित्रा पाल ने 'स्वच्छ कवच' किट की उपयोगिता और अभियान के उद्देश्य की जानकारी दी। राज्य के विभिन्न नगर निकायों और शहरी विकास एजेंसियों के अधिकारी भी वर्चुअल माध्यम से कार्यक्रम में शामिल हुए। मुख्यमंत्री ने शहरी क्षेत्रों में बढ़ते प्रदूषण, अनियंत्रित वृक्षों की कटाई और कंक्रीट के विस्तार पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि पर्यावरण असंतुलन का सबसे अधिक असर बच्चों, बुजुर्गों और श्वसन संबंधी रोगों से पीड़ित लोगों पर पड़ रहा है। उन्होंने शहरों के विकास के साथ-साथ हरित क्षेत्र बढ़ाने, स्वच्छता और शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने पर समान रूप से बल देने की आवश्यकता बताई। मुख्यमंत्री ने बताया कि पांच जून को विश्व पर्यावरण दिवस पर शुरू किए गए 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के तहत इस वर्ष पूरे राज्य में सात करोड़ पौधे लगाने का लक्ष्य रखा गया है।

तिलक लगाने और तुलसी की माला पहनने पर छात्रा को स्कूल से निकाला गया

ब्यूरो, कोलकाता : बंगाल के पुरुलिया जिले के पाड़ा क्षेत्र में माथे पर तिलक लगाने और गले में तुलसी की माला पहनकर स्कूल आने पर 11वीं की एक छात्रा को स्कूल से निकाल दिया गया। विवाद उत्पन्न होने पर स्कूल शिक्षा विभाग के हस्तक्षेप से स्कूल प्रबंधन ने सुमना माझी नामक उक्त छात्रा का ट्रांसफर सर्टिफिकेट वापस लेकर उसका दोबारा नामांकन किया। प्राप्त जानकारी के अनुसार पाड़ा गर्ल्स हाई स्कूल (उच्च माध्यमिक) की छात्रा सुमना गुरु से दीक्षा लेने के बाद पिछले एक वर्ष से तिलक और तुलसी की माला पहनकर स्कूल आ रही थी। हाल में प्रार्थना सभा के दौरान सभी छात्राओं और शिक्षिकाओं के सामने उसके माथे का तिलक मिटा दिया गया था और उसे तिलक लगाकर व तुलसी की माला पहनकर स्कूल नहीं आने की हिदायत दी गई थी। सुमना की मां बसंती माझी के विरोध दर्ज कराने पर स्कूल प्रबंधन ने अभिभावकों के हस्ताक्षर के बगैर एकतरफा रूप पर सुमना का स्थानांतरण प्रमाणपत्र भेज दिया। इसे लेकर विवाद उत्पन्न हो गया। स्कूल शिक्षा विभाग ने जिला विद्यालय निरीक्षक से रिपोर्ट तलब की। विभाग के हस्तक्षेप के बाद स्कूल प्रबंधन ने स्थानांतरण प्रमाणपत्र वापस लेकर छात्रा का दोबारा नामांकन किया।

कलका एक शुभ संकेत है

संघमित्रा सक्सेना : कलका भारत में हुए कई ऐतिहासिक विचरण के साक्षी हैं। आखिर कलका है क्या? कलका शब्द का अर्थ है बूटा यानी बिंदी की तरह देखने वाली एक चिन्ह। अधिकतर महिलाएं सजने संवरने के लिए इसका प्रयोग करती है। आम की तरह देखने में एक खास किस्म की नक्शा। ज्यादातर बंगाली रिचुअल्स में इसका व्यवहार होता है।

कहां से आया कलका?

कलका पारसी लोग पूजा करते थे। भारत में जब मुगल साम्राज्य कायम था तब मुगलों ने कलका कल्चर को भारत में लेकर आया। दरअसल मुगल कलका का इस्तेमाल अपनी खुफिया नक्शा बनाने में इस्तेमाल करती थी। एक ऐसा सांकेतिक चिन्ह इसके बारे में केवल बादशाह और उनके साथी को ही जानकारी होती थी। बाद में इन सभी सांकेतिक चिन्ह को बंगाल के कारीगरों ने सीख ली। फिर इसे कपड़ों के डिजाइन में इस्तेमाल करने लगे। कलमकारी कालका, साबेकी कालका आज भी बंगाल के संस्कृति को एक अलग पहचान देती है। ईरान में शुरू इस अनोखे कलका आज भी विविध संप्रदाय समूह भारतवर्ष के खास पहचान बन चुकी है। 17 और 18 के दशकों में कश्मीर के शॉल में कलका का काम काफी चर्चित थी।

कलका कल्चर और पश्चिमबंगाल

कलका कल्चर और पश्चिमबंगाल एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। ईरान की संस्कृति मुगलों के हाथ से होते हुए पश्चिम बंगाल में प्रवेश की। बंगाल का तांत की साड़ी में कॉल का का काम धीरे-धीरे लोकप्रिय होने लगी। विश्व में इस काम को पैसले भी कहा जाता है। कॉल का डिजाइन खास कर पश्चिम बंगाल के महिलाओं को काफी आकर्षित किया था। यही कारण है कि बंगाली रिचुअल्स में कलका शुभ माना जाता है। इसलिए कलका बंगाली शादी में दुल्हन के फोरहेड पर और चिक पर किया जाता है। आम की तरह देखने में कलका शुभ काम के प्रतिक मानी जाती है।

फैशन इंडस्ट्री में कलका कैसे करते है?

ब्यूटी एंड फैशन इंडस्ट्री आज बहुत आगे निकल चुकी है। इसके बावजूद घर की संस्कृति से जुड़े बच्चों के लिए कलका बनाना मुश्किल नहीं है।

घर में पूजा अर्चना के समय देवी के आराधना के लिए जो शुभचिन्ह बनाया जाता है उन्हें ही कलका कहते हैं। इसे बनाने के लिए सिंपल एक फार्मूला होता है। कुछ सांकेतिक चिन्ह इस फार्मूले में काम करती है। इन्हीं सांकेतिक कोन का इस्तेमाल करके कलका बनती है। चंदन और अलता से कलका बनाया जाता है। वर्तमान में फैशन इंडस्ट्री पेन से भी कॉल का डिजाइन करते है।

हावड़ा में हिंदू राष्ट्र अधिवेशन: भारत को हिंदू राष्ट्र घोषित करने की उठी मांग

सोनी झा: हावड़ा, पश्चिम बंगाल के हावड़ा स्थित शरद सदन प्रेक्षागृह में दो दिवसीय हिंदू राष्ट्र अधिवेशन का शुभारंभ हुआ। अधिवेशन में पश्चिम बंगाल के विभिन्न जिलों से आए साधु-संतों, धार्मिक संगठनों के प्रतिनिधियों और श्रद्धालुओं भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान वक्ताओं ने सनातन धर्म के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ाने पर जोर देते हुए भविष्य में भारत को हिंदू राष्ट्र घोषित करने की मांग उठाई। इस अवसर पर घर वापसी सहित सनातन परंपरा के प्रचार-प्रसार और समाज को संगठित करने जैसे विषयों पर भी चर्चा की गई। आयोजकों के अनुसार, यह अधिवेशन आदि गुरु शंकराचार्य की संस्था पीठ परिषद, आदित्य वाहिनी, आनंद वाहिनी पश्चिम बंगाल शाखा, एस्ट्रोलॉजर संगठन तथा आर्यमाता संस्था के तत्वावधान में आयोजित किया गया है। आयोजन से जुड़े प्रेमचंद झा ने कहा कि दुनिया के कई देशों की पहचान उनके बहुसंख्यक धर्म के आधार पर है, जबकि बड़ी संख्या में हिंदू आबादी होने के बावजूद हिंदुओं के लिए कोई हिंदू राष्ट्र नहीं है। उन्होंने कहा कि इसी मांग को लेकर यह अधिवेशन आयोजित किया गया है और भविष्य में इसे और बड़े स्तर पर आयोजित कर जन-जन तक यह संदेश पहुंचाने का प्रयास किया जाएगा। दो दिवसीय अधिवेशन के पहले दिन विभिन्न जिलों से आए साधु-संतों और उपस्थित लोगों ने हिंदू राष्ट्र की मांग के समर्थन में अपने विचार रखे।

आदि गुरु शंकराचार्य टैंपल एंड सोशल डेवलपमेंट ट्रस्ट के मुख्य ट्रस्टी देवाशीष गोस्वामी ने कहा कि 'हिंदू राष्ट्र हमारा अधिकार है और इसी उद्देश्य को सामने रखकर इस अधिवेशन का आयोजन किया गया है।' उन्होंने दावा किया कि सनातन धर्म युगों से चला आ रहा है, लेकिन राजनीतिक कारणों से इसकी मूल भावना को कमजोर किया गया। उनका यह भी कहना था कि जब देश का विभाजन धर्म के आधार पर हुआ, तो हिंदू राष्ट्र की अवधारणा को पुनर्स्थापित करना उनका अधिकार और कर्तव्य है। उन्होंने बताया कि ट्रस्ट पिछले कई वर्षों से इस प्रकार के अधिवेशनों का आयोजन करता आ रहा है। कार्यक्रम में श्रीमद दंडी स्वामी सुरेश्वर आश्रम महंत महाराज, ऋषड़ा प्रेम मंदिर के महासचिव श्रीमद् निर्गुणानंद ब्रह्मचारी महाराज, श्रीमद् हिरण्मय गोस्वामी, दंडी स्वामी रामानंद तीर्थ, महामिलन मठ के मठाधीश डॉ. शोभन भट्टाचार्य, स्वामी सर्वानंद अवधूत महाराज, बंधु गौरव ब्रह्मचारी सहित अनेक संत एवं गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

बंगाल में अगस्त में आएगा यूसीसी विधेयक
ड्राफ्ट कमेटी को कैबिनेट की मंजूरी

अजय कुमार झा: कोलकाता, बंगाल में सत्ता परिवर्तन के बाद शुभेंदु अधिकारी के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार ने अपने प्रमुख चुनावी वादों में शामिल समान नागरिक संहिता (यूसीसी) लागू करने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी की अध्यक्षता में हुई राज्य मंत्रिमंडल (कैबिनेट) की बैठक में राज्य के भविष्य की दिशा तय करने वाले कई ऐतिहासिक प्रस्तावों पर मुहर लगाई गई। इस बैठक का सबसे बड़ा और धमाकेदार एजेंडा राज्य में यूसीसी लागू करने की दिशा में कदम बढ़ाना रहा। कैबिनेट ने प्रस्तावित यूसीसी विधेयक का मसौदा (ड्राफ्ट) तैयार करने और इसकी बारीकी से जांच व समीक्षा के लिए एक उच्चस्तरीय समिति के गठन को अपनी हरी झंडी दे दी है। इस महत्वपूर्ण समिति की कमान सुप्रीम कोर्ट की सेवानिवृत्त न्यायाधीश जस्टिस रंजना प्रकाश देसाई को सौंपी गई है, जिसमें कुल चार सदस्य शामिल होंगे। यह कदम स्पष्ट संकेत देता है कि बंगाल अब राष्ट्रीय मुख्यधारा की नीतियों के साथ कदमताल करने की पूरी तरह तैयार है। इससे पहले 29 जून को मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी विधानसभा में घोषणा की कि यूसीसी विधेयक को अगस्त में विधानसभा में पेश किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने यूसीसी के लिए समिति गठित करने की घोषणा विधानसभा में ही की थी। इस समिति में कानूनविद, शिक्षाविद सहित विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ शामिल हैं। मुख्यमंत्री ने सदन को बताया कि समिति को अपनी रिपोर्ट देने के लिए एक महीने का समय दिया गया है। समिति की रिपोर्ट मिलने के बाद अगस्त में हर हाल में यह विधेयक विधानसभा में पेश किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि समिति भाजपा शासित गुजरात, उत्तराखंड और असम में पहले से पारित यूसीसी विधेयक का अध्ययन करेगी और उसी तर्ज पर यहां भी उक्त कानून लाया जाएगा। असम में मई में ही यूसीसी विधेयक पारित किया गया था।।

आदिवासी समुदाय नहीं आएंगे इस विधेयक के दायरे में

मुख्यमंत्री ने सदन में यह भी स्पष्ट किया कि संवैधानिक रूप से संरक्षित आदिवासी समुदाय इस विधेयक के दायरे में नहीं आएंगे। उन्हें इससे छूट होगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि हम यूसीसी विधेयक लाने को लेकर प्रतिबद्ध हैं। बंगाल में हर हाल में यूसीसी लागू होगा। प्रस्तावित कानून का उद्देश्य धर्म से इतर विवाह, तलाक, उत्तराधिकार और गोद लेने जैसे नागरिक मामलों के लिए एक समान कानूनी ढांचा तैयार करना है। इधर, राज्य सरकार के इस फैसले को बंगाल की राजनीति में एक बड़े और निर्णायक कदम के तौर पर देखा जा रहा है। इससे पहले प्रदेश भाजपा अध्यक्ष शमिक भट्टाचार्य ने भी अपना रुख साफ करते हुए कहा था कि आदिवासी समुदायों को यूसीसी के दायरे से बाहर रखा जाएगा। दूसरी ओर, तृणमूल कांग्रेस ने भाजपा सरकार के प्रस्तावित यूसीसी विधेयक लाने के कदम का कड़ा विरोध शुरू कर दिया है। तृणमूल कांग्रेस का आरोप है कि भाजपा सरकार इस कानून को कानूनी सुधार के बजाय राजनीतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल करना चाहती है।

बंगाल में तेजी से बढ़ रही आरएसएस की शाखाएं
सितंबर तक 10 हजार शाखाओं और 10 लाख युवाओं तक पहुंचने का लक्ष्य

बंगाल में सत्ता परिवर्तन के बाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के संगठनात्मक विस्तार की रफ्तार तेजी से बढ़ी है। संघ का दावा है कि चार मई से पहले राज्य में उसकी 5100 शाखाएं थीं, जिन्हें बढ़ाकर सितंबर तक 10 हजार करने का लक्ष्य रखा गया है। इसी दौरान संघ के शताब्दी वर्ष के अवसर पर 10 लाख युवक-युवतियों तक पहुंचने के लिए विशेष जनसंपर्क अभियान भी चलाया जाएगा।

संघ के अनुसार, दक्षिण बीरभूम में चार मई से पहले 42 शाखाएं थीं, जो अब बढ़कर 85 हो गई है। दक्षिण बंगाल के संघचालक सिद्धार्थ मंडल ने कहा कि राज्य में सरकार बदलने के बाद संघ के प्रति लोगों की रुचि बढ़ी है। उनके अनुसार, पहले भय का माहौल था, जो अब समाप्त हो गया है। उन्होंने दावा किया कि सितंबर तक केवल दक्षिण बीरभूम में ही शाखाओं की संख्या 500 तक पहुंच जाएगी। कोलकाता में मार्च तक लगभग 150 शाखाएं थीं, जिनकी संख्या भी तेजी से बढ़ रही है। शाखाओं में स्वयंसेवकों की उपस्थिति में भी उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। उत्तर 24 परगना के बैरकपुर की एक शाखा में दो मई के चुनाव परिणाम से पहले जहां केवल चार स्वयंसेवक आते थे, वहीं जुलाई के पहले सप्ताह तक यह संख्या बढ़कर 35 से 40 हो गई।

सत्ता परिवर्तन के बाद और सशक्त हुई राष्ट्रवादी की भावना

संघ के सूत्रों के अनुसार, सत्ता परिवर्तन के बाद आनलाइन माध्यम से भी बड़ी संख्या में लोग सदस्यता के लिए आवेदन कर रहे हैं। अब तक करीब 25 लाख आवेदन प्राप्त होने का दावा किया गया है। इनमें बड़ी संख्या में युवा, मेडिकल और इंजीनियरिंग के विद्यार्थी भी शामिल हैं। आरएसएस के दक्षिण बंगाल प्रांत के प्रचार प्रमुख विप्लव राय ने कहा कि बंगाल के लोगों में राष्ट्रवादी भावना मजबूत है और सत्ता परिवर्तन के बाद यह और सशक्त हुई है। उन्होंने बताया कि गांव और शहर के युवाओं के लिए विशेष कार्यक्रमों के माध्यम से लाखों युवक-युवतियों को राष्ट्रवादी विचारधारा से जोड़ने का प्रयास किया जाएगा।

जोका-एस्प्लानेड मेट्रो परियोजना में बड़ी उपलब्धि
विक्टोरिया स्टेशन तक सुरंग बनाकर पहुंची टीबीएम 'दुर्गा'

सोनी कुमारी झा: कोलकाता मेट्रो की जोका-एस्प्लानेड परियोजना में शुक्रवार को बड़ी व ऐतिहासिक सफलता मिली। टनल बोरिंग मशीन (टीबीएम) 'दुर्गा' खिदिरपुर से जमीन के अंदर करीब 1.7 किलोमीटर तक भूमिगत सुरंग बनाते हुए ठीक एक साल बाद सफलतापूर्वक अपने निर्धारित गंतव्य निर्माणाधीन विक्टोरिया मेट्रो स्टेशन तक पहुंच गई। इसी के साथ पर्पल लाइन के खिदिरपुर से विक्टोरिया मेमोरियल तक पहले चरण में मेट्रो के लिए सुरंग निर्माण का काम पूरा हो गया है। इसे परियोजना के सबसे महत्वपूर्ण चरणों में से एक माना जा रहा है। इस अवसर पर कोलकाता मेट्रो के महाप्रबंधक (जीएम) प्रेम सागर गुप्ता, नेपाल के महावाणिज्य दूत, कोलकाता नगर निगम की आयुक्त व प्रशासक स्मिता पांडे, मेट्रो रेल, रेल विकास निगम लिमिटेड (आरवीएनएल), एलएंडटी तथा अन्य संबंधित संस्थाओं के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे। मेट्रो अधिकारियों के अनुसार टीबीएम 'दुर्गा' विक्टोरिया स्टेशन तक सुरंग बनाते हुए बाहर निकली। इसी के साथ टीबीएम 'दुर्गा' ने अपना लक्ष्य हासिल कर लिया। खिदिरपुर के सेंट थामस स्कूल परिसर में बने शाफ्ट से विक्टोरिया स्टेशन तक सुरंग निर्माण का कार्य पिछले वर्ष 10 जुलाई को शुरू हुआ था। ठीक एक वर्ष बाद इस चरण का सफल समापन हुआ है।

इस अवसर पर कोलकाता मेट्रो के महाप्रबंधक प्रेम सागर गुप्ता ने परियोजना से जुड़े सभी अभियंताओं, कर्मचारियों और अधिकारियों को बधाई देते हुए कहा कि सुरंग निर्माण का कार्य पूरी तरह सुरक्षित, सुनियोजित और पेशेवर तरीके से पूरा किया गया। निर्माण के दौरान शहर की सतह पर यातायात सामान्य बनाए रखते हुए सुरक्षा और गुणवत्ता के उच्च मानकों का पालन

किया गया। मेट्रो अधिकारियों के अनुसार, जोका-एस्प्लानेड गलियारा शुरू होने के बाद कोलकाता की सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था और अधिक मजबूत होगी तथा यात्रियों की आवाजाही पहले की तुलना में अधिक सुगम हो जाएगी। अधिकारियों ने कहा कि यह उपलब्धि देश में आधुनिक जन परिवहन नेटवर्क के विस्तार और विकसित भारत के लक्ष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

दिसंबर 2026 तक काम पूरा होने की उम्मीद

बताते चलें कि पिछले वर्ष जुलाई में ही दूसरी टीबीएम मशीन 'दिव्या' ने भी खिदिरपुर से ही जोका-एस्प्लानेड पर्पल लाइन मेट्रो कारिडोर में समानांतर सुरंग की खुदाई का काम शुरू किया था। दोनों मशीन जमीन से 17 मीटर नीचे टनल खोद रही है। टनल बोरिंग मशीन 'दुर्गा' की बात करें तो यह एक पृथ्वी दबाव संतुलन (ईपीबी) प्रकार की टनलिंग मशीन है, जो 95 मीटर लंबी, 600 टन वजनी है और इसका बाहरी व्यास 6.63 मीटर है। विक्टोरिया तक सुरंग निर्माण का काम पूरा करने के बाद अब यह दोनों जुड़वा मशीनें पार्क स्ट्रीट की तरफ सुरंग खोदती हुई बढ़ेगी। मिली जानकारी के अनुसार 'दुर्गा' द्वारा पार्क स्ट्रीट तक सुरंग खुदाई का काम दिसंबर 2026 तक और 'दिव्या' की खुदाई मार्च 2027 में पूरी होने की उम्मीद है।

16 साल बाद कोलकाता पुलिस में दो महिला इंस्पेक्टर बनीं थाना प्रभारी

कोलकाता पुलिस में करीब 16 साल बाद एक साथ दो महिला इंस्पेक्टरों को कोलकाता के थानों का प्रभारी बनाया गया है। चमेली मुखोपाध्याय को सिंथी थाना का नया ओसी बनाया गया है। वहीं, रूपा सिंह को सरसुना थाना का नया प्रभारी नियुक्त किया गया है। मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी सरकार के कार्यकाल में पुलिस और प्रशासनिक ढांचे में लगातार किए जा रहे बदलावों को कानून-व्यवस्था मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

कोलकाता पुलिस में बड़े पैमाने पर प्रशासनिक फेरबदल किया गया। ओसी और अतिरिक्त ओसी स्तर के कुल 33 इंस्पेक्टरों का तबादला किया गया। इनमें शहर के करीब 20 थानों के प्रभारी भी बदले गए। चमेली मुखोपाध्याय पहले उल्टाडांगा महिला थाना की ओसी थीं। विधानसभा चुनाव से पहले वह कुछ समय के लिए कालीघाट थाना की ओसी भी रह चुकी हैं। वहीं, रूपा सिंह टालीगंज महिला थाना की ओसी थीं।

भवानीपुर थाना के नए ओसी राजीव चट्टोपाध्याय बनाए गए हैं। यहां से इंस्पेक्टर सौमित्र बसु का तबादला एसटीएफ में किया गया है। मौसम चट्टोपाध्याय को चेतला थाना का ओसी और अमित चट्टोपाध्याय को पार्क स्ट्रीट थाना का ओसी बनाया गया है। गौतम रुज को भांगड़ थाना की जिम्मेदारी सौंपी गई है। बंगाल में सरकार बदलने के बाद कोलकाता पुलिस में यह दूसरा बड़ा फेरबदल है। इसी महीने की शुरुआत में डिप्टी कमिश्नर जफर अजमल किदवई को कोलकाता पुलिस का संयुक्त पुलिस आयुक्त बनाया गया था। एसटीएफ के डिप्टी कमिश्नर प्रदीप कुमार यादव को चौथी बटालियन का डिप्टी कमिश्नर नियुक्त किया गया था। इससे पहले नवान्न की अधिसूचना के अनुसार राज्य में 108 थाना प्रभारियों का भी एक साथ तबादला किया गया था।

लोकतांत्रिक संस्थाओं की सबसे बड़ी ताकत जनता का विश्वास

सोनू कुमार झा: कोलकाता, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने शनिवार को जनप्रतिनिधियों से लोकतांत्रिक संस्थाओं की गरिमा बनाए रखने और सदन को सार्थक संवाद का मंच बनाने का आह्वान करते हुए कहा कि नारेबाजी, व्यवधान और गतिरोध से कोई नेता नहीं बनता। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में आलोचना सुनना और जनता की सेवा ही सर्वोपरि है। बंगाल के नवनिर्वाचित विधायकों के लिए आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर (प्रबोधन कार्यक्रम) के समापन सत्र को संबोधित करते हुए बिरला ने जनप्रतिनिधियों से जनता की अपेक्षाओं पर खरा उतरने का आह्वान किया। ऐतिहासिक बंगाल विधानसभा के सदन में शाम में आयोजित समापन समारोह में उन्होंने कहा कि विधायकों का दायित्व केवल कानून बनाना नहीं, बल्कि आम लोगों की समस्याओं का समाधान करना और उनके विश्वास पर खरा उतरना भी है। बिरला ने विधायकों से कहा, मन में जोश रखें, लेकिन काम हमेशा शांत दिमाग से करें। किसी भी सदन का प्रभावी नेता बनने के लिए तथ्यों और प्रमाणों के आधार पर अपनी बात रखने की क्षमता जरूरी है। बंगाल की जनता ने विधायकों पर विश्वास जताकर उन्हें विधानसभा भेजा है, इसलिए प्रत्येक जनप्रतिनिधि का दायित्व अपने क्षेत्र और पूरे राज्य के विकास के लिए काम करना है। बिरला ने कहा कि लोकतंत्र में सरकारों को विपक्ष की आलोचनाओं को भी गंभीरता से सुनना चाहिए। यदि किसी मुद्दे में वास्तविक समस्या हो तो उसका समाधान करना ही लोकतांत्रिक व्यवस्था की मूल भावना है। विभिन्न दृष्टिकोणों को सुनने और उन पर सकारात्मक विचार करने से ही प्रभावी समाधान निकलते हैं।

सबसे बड़ी शक्ति जनता का विश्वास

उन्होंने कहा कि लोकतांत्रिक संस्थाओं की सबसे बड़ी शक्ति जनता का विश्वास है। निर्वाचित प्रतिनिधियों को जनता की समस्याओं, चुनौतियों और अपेक्षाओं को प्रभावी ढंग से सदन में उठाना चाहिए। विधायक केवल अपने निर्वाचन क्षेत्र के प्रतिनिधि नहीं, बल्कि पूरे राज्य के विकास और भविष्य के सहभागी होते हैं। इसलिए उन्हें व्यापक और समावेशी दृष्टिकोण अपनाते हुए ऐसी नीतियों और कानूनों के निर्माण में योगदान देना चाहिए, जो राज्य के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त करें। उन्होंने सलाह दी कि जनता के भरोसे पर खरा उतरें और विकास की नई इबारत लिखें। समापन सत्र में बंगाल के राज्यपाल आरएन रवि, हरियाणा के राज्यपाल प्रो. असीम कुमार घोष, कई राज्यों के विधानसभा अध्यक्ष सहित बंगाल विधानसभा के अध्यक्ष रथींद्र बोस, राज्य के अधिकतर मंत्रियों तथा विधायकगण उपस्थित रहे।

नए विधायकों को सिखाया गया संसदीय व विधायी प्रक्रियाओं का पाठ

लोकसभा सचिवालय के संसदीय अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान (प्राइड) तथा बंगाल विधानसभा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में संसदीय परंपराएं, विधायी प्रक्रिया, समिति प्रणाली, वित्तीय एवं बजटीय प्रक्रिया, कार्यपालिका की जवाबदेही, संसदीय विशेषाधिकार, आचार-नीति तथा डिजिटल विधायी पहलों जैसे विषयों पर विशेषज्ञों ने विधायकों को प्रशिक्षण दिया। राज्य में मई में हुए सत्ता परिवर्तन व भाजपा की सरकार बनने के बाद बंगाल विधानसभा के इतिहास में यह पहली बार है जब नए विधायकों के लिए इस तरह का प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विपक्षी दलों के विधायकों ने भी इसमें हिस्सा लिया। विधानसभा अध्यक्ष रथींद्र बोस ने कहा कि ऐसा कोई रिकार्ड नहीं है कि बंगाल में विधायकों के लिए इस तरह का प्रशिक्षण कार्यक्रम पहले कभी आयोजित हुआ है। समापन सत्र को बंगाल व हरियाणा के राज्यपाल ने भी संबोधित किया। लोकसभा अध्यक्ष ने कहा कि सार्वजनिक जीवन निरंतर सीखने, सेवा करने और स्वयं को बेहतर बनाने की यात्रा है। उन्होंने सदस्यों से आग्रह किया कि वे स्वयं को जनसेवा के लिए समर्पित करें और यह सुनिश्चित करें कि शासन का लाभ समाज के प्रत्येक वर्ग, विशेषकर अंतिम पंक्ति में खड़े अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे।

बंगाल को एक बार फिर राष्ट्र को दिशा देने का दायित्व निभाना चाहिए

बिरला ने विकसित भारत 2047 के लक्ष्य का उल्लेख करते हुए कहा कि भारत का विकास उसके राज्यों के विकास से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। बंगाल ने इतिहास में अनेक क्षेत्रों में देश का नेतृत्व और मार्गदर्शन किया है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि बंगाल एक बार फिर भारत की विकास यात्रा में अग्रणी भूमिका निभाएगा और राष्ट्र को दिशा देने की जिम्मेदारी बखूबी निभाएगा।

NAME CHANGE

I, RAMASIS BANERJEE (Old name), S/o Ram Sankar Banerjee, residing at 7 Upendra Nath Chatterjee Lane, P.O.- B. Garden, P.S.- B. Garden, Dist.- Howrah - 711103, have changed my name from RAMASIS BANERJEE (Old name) to RAMASIS BANDYOPADHYAY (New name) and shall henceforth be known as RAMASIS BANDYOPADHYAY (New name) as declared by the affidavit vide Sl. No. 20 sworn in the Court of Ld. Judicial Magistrate (1st Class) at Howrah on dated 15.07.2026, RAMASIS BANDYOPADHYAY (New name) and RAMASIS BANERJEE (Old name) both are same and one identical person.

भगवान भोलेनाथ की भक्ति, व्रत, पूजा और आध्यात्मिक साधना

हिंदू धर्म में श्रावण मास को भगवान शिव का सबसे प्रिय महीना माना जाता है। मान्यता है कि इस पूरे महीने शिवभक्ति, व्रत, जप, अभिषेक और दान-पुण्य करने से भगवान भोलेनाथ अत्यंत प्रसन्न होते हैं और भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं। देशभर के शिवालयों में इस दौरान श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ती है। कांवड़ यात्रा, रुद्राभिषेक, महामृत्युंजय मंत्र का जाप, बिल्वपत्र अर्पण और सोमवार के व्रत इस महीने की विशेष पहचान हैं। श्रावण मास 30 जुलाई (गुरुवार) से प्रारंभ होकर 28 अगस्त (शुक्रवार) तक रहेगा। इस अवधि में आने वाले प्रत्येक सोमवार का विशेष धार्मिक महत्व है। पूरे देश में शिवालयों को सजाया जाएगा और लाखों श्रद्धालु जलाभिषेक कर भगवान शिव का आशीर्वाद प्राप्त करेंगे।

समुद्र मंथन से जुड़ी है श्रावण मास की महिमा

पौराणिक कथाओं के अनुसार, जब देवताओं और दानवों ने समुद्र मंथन किया तो सबसे पहले हलाहल नामक विष निकला। उस विष से संपूर्ण सृष्टि संकट में पड़ गई। तब भगवान शिव ने संसार की रक्षा के लिए उस विष का पान कर लिया। विष के प्रभाव को कम करने के लिए देवताओं ने भगवान शिव पर लगातार जल चढ़ाया। इसी कारण श्रावण मास में जलाभिषेक की परंपरा प्रारंभ हुई। भगवान शिव के कंठ में विष रुक जाने से उनका नाम "नीलकंठ" पड़ा। तभी से श्रद्धालु इस पूरे महीने शिवलिंग पर जल, दूध, दही, शहद, गंगाजल और बेलपत्र अर्पित करते हैं।

क्यों प्रिय है भगवान शिव को श्रावण मास

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार श्रावण मास में प्रकृति अपने सबसे सुंदर स्वरूप में होती है। वर्षा ऋतु के कारण वातावरण शुद्ध रहता है और धरती हरियाली से भर जाती है। भगवान शिव को प्रकृति का देवता भी माना जाता है। इसलिए इस महीने की पूजा का विशेष महत्व बताया गया है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इस समय सूर्य कर्क राशि में रहते हैं और चंद्रमा का भी विशेष प्रभाव रहता है। भगवान शिव चंद्रमा को अपने मस्तक पर धारण करते हैं, इसलिए श्रावण मास शिव उपासना के लिए अत्यंत शुभ माना जाता है।

श्रावण में सोमवार का विशेष महत्व

श्रावण मास में आने वाले सोमवार सबसे अधिक शुभ माने जाते हैं। मान्यता है कि इन दिनों व्रत रखने और भगवान शिव की पूजा करने से विवाह में आने वाली बाधाएं दूर होती हैं, संतान सुख की प्राप्ति होती है तथा परिवार में सुख-समृद्धि आती है। श्रद्धालु प्रातः स्नान कर स्वच्छ वस्त्र धारण करते हैं और शिव मंदिर जाकर जलाभिषेक करते हैं। इसके बाद भगवान शिव को बेलपत्र, धतूरा, भांग, आक, सफेद पुष्प और फल अर्पित किए जाते हैं।

2026 के श्रावण सोमवार:
- पहला सोमवार – 3 अगस्त 2026
- दूसरा सोमवार – 10 अगस्त 2026
- तीसरा सोमवार – 17 अगस्त 2026
- चौथा सोमवार – 24 अगस्त 2026

इन सभी सोमवारों पर देशभर के प्रमुख शिव मंदिरों में विशेष पूजा और रुद्राभिषेक आयोजित किए जाएंगे।

श्रावण में क्या करें

श्रावण मास केवल व्रत रखने का महीना नहीं है, बल्कि आत्मशुद्धि और आध्यात्मिक उन्नति का भी अवसर है।
इस महीने श्रद्धालुओं को प्रतिदिन प्रातः स्नान कर भगवान शिव का ध्यान करना चाहिए। "ॐ नमः शिवाय" मंत्र का नियमित जाप करना अत्यंत शुभ माना गया है। महामृत्युंजय मंत्र का जाप भी स्वास्थ्य, आयु और मानसिक शांति के लिए लाभकारी माना जाता है।
शिवलिंग पर गंगाजल या स्वच्छ जल अर्पित करें। यदि संभव हो तो पंचामृत से अभिषेक करें। बेलपत्र तीन पत्तियों वाला होना चाहिए और उस पर कोई कटाव नहीं होना चाहिए।
गरीबों को भोजन कराना, गौसेवा करना, पौधे लगाना तथा जरूरतमंद लोगों की सहायता करना भी श्रावण मास में अत्यंत पुण्यकारी माना गया है।

श्रावण में क्या नहीं करना चाहिए

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इस महीने सात्विक जीवन अपनाना चाहिए।

- •मांस और मदिरा का सेवन नहीं करना चाहिए।
- •तामसिक भोजन से बचना चाहिए।
- •झूठ, क्रोध और अपशब्दों से दूर रहना चाहिए।
- •किसी का अपमान नहीं करना चाहिए।
- •पेड़-पौधों को अनावश्यक नुकसान नहीं पहुंचाना चाहिए।
- •नशे से पूरी तरह दूर रहना चाहिए।

शिवलिंग पर क्या चढ़ाएं

भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए विभिन्न प्रकार की सामग्री अर्पित की जाती है।

- गंगाजल
- शुद्ध जल
- दूध
- दही
- शहद
- घी
- शक्कर
- बेलपत्र
- धतूरा
- भांग
- सफेद चंदन
- सफेद पुष्प
- अक्षत
- फल

इन सभी सामग्रियों का अपना धार्मिक महत्व बताया गया है।

बेलपत्र का महत्व

बेलपत्र भगवान शिव को सबसे प्रिय माना गया है। इसकी तीन पत्तियां ब्रह्मा, विष्णु और महेश का प्रतीक मानी जाती हैं। ऐसी मान्यता है कि एक बेलपत्र अर्पित करने से करोड़ों यज्ञों के बराबर पुण्य प्राप्त होता है।

रुद्राभिषेक का महत्व

श्रावण मास में रुद्राभिषेक का विशेष महत्व है। विद्वान आचार्यों द्वारा रुद्रसूक्त और नमकम-चमकम के मंत्रों के साथ शिवलिंग का अभिषेक कराया जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इससे ग्रह दोष शांत होते हैं और जीवन में सुख-समृद्धि आती है।

महामृत्युंजय मंत्र का महत्व

महामृत्युंजय मंत्र को भगवान शिव का अत्यंत प्रभावशाली मंत्र माना गया है।

"ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥"

मान्यता है कि श्रद्धा और नियमपूर्वक इस मंत्र का जाप करने से मानसिक शांति, सकारात्मक ऊर्जा और आध्यात्मिक बल की प्राप्ति होती है।

कांवड़ यात्रा का महत्व

श्रावण मास में लाखों शिवभक्त गंगोत्री, हरिद्वार, सुल्तानगंज, देवघर तथा अन्य तीर्थों से गंगाजल लेकर अपने-अपने क्षेत्र के शिवालयों तक पैदल यात्रा करते हैं। इसे कांवड़ यात्रा कहा जाता है। यात्रा के दौरान श्रद्धालु "बोल बम" और "हर-हर महादेव" के जयघोष करते हुए भगवान शिव के प्रति अपनी आस्था व्यक्त करते हैं।

देश के प्रमुख शिवधाम

भारत में अनेक प्रसिद्ध शिव मंदिर हैं जहां श्रावण मास में लाखों श्रद्धालु दर्शन करने पहुंचते हैं।

- काशी विश्वनाथ (वाराणसी)
- केदारनाथ (उत्तराखंड)
- महाकालेश्वर (उज्जैन)
- सोमनाथ (गुजरात)
- त्र्यंबकेश्वर (महाराष्ट्र)
- ओंकारेश्वर (मध्य प्रदेश)
- वैद्यनाथ धाम (देवघर)
- भीमाशंकर
- रामेश्वरम
- अमरनाथ गुफा

इन सभी ज्योतिर्लिंगों और शिवधामों का धार्मिक महत्व अत्यंत विशेष माना जाता है।

श्रावण और स्वास्थ्य

आयुर्वेद के अनुसार वर्षा ऋतु में पाचन शक्ति अपेक्षाकृत कमजोर हो जाती है। इसलिए हल्का, सात्विक और सुपाच्य भोजन करने की सलाह दी जाती है। व्रत और संयमित भोजन शरीर को संतुलित रखने में भी सहायक माने जाते हैं।

सामाजिक महत्व

श्रावण मास केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है। यह समाज में सेवा, सहयोग और सद्भाव का भी संदेश देता है। अनेक स्थानों पर निःशुल्क जल सेवा, चिकित्सा शिविर, भंडारे और रक्तदान शिविर आयोजित किए जाते हैं। पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्षारोपण अभियान भी चलाए जाते हैं।

महिलाओं के लिए विशेष महत्व

श्रावण मास विवाहित और अविवाहित दोनों महिलाओं के लिए विशेष माना जाता है। विवाहित महिलाएं परिवार की सुख-समृद्धि और पति की दीर्घायु के लिए भगवान शिव और माता पार्वती की पूजा करती हैं। वहीं अविवाहित कन्याएं योग्य जीवनसाथी की कामना से सोमवार का व्रत रखती हैं।

युवाओं के लिए संदेश

आज के व्यस्त जीवन में श्रावण मास आत्मचिंतन, अनुशासन और सकारात्मक जीवनशैली अपनाने का अवसर देता है। नियमित ध्यान, योग, संयमित भोजन और आध्यात्मिक अध्ययन व्यक्ति के मानसिक तनाव को कम करने में सहायक हो सकते हैं।

पर्यावरण संरक्षण का संदेश

भगवान शिव को प्रकृति का संरक्षक माना जाता है। इसलिए श्रावण मास में अधिक से अधिक वृक्ष लगाने, जल संरक्षण करने, नदियों को स्वच्छ रखने और प्लास्टिक के उपयोग को कम करने का संकल्प लेना भी इस पर्व की भावना के अनुरूप माना जाता है।
श्रावण मास भगवान शिव की उपासना का सबसे पवित्र काल माना जाता है।
वर्ष 2026 में 30 जुलाई से 28 अगस्त तक चलने वाला यह महीना श्रद्धालुओं के लिए भक्ति, साधना, संयम और सेवा का विशेष अवसर लेकर आएगा।
इस दौरान श्रद्धापूर्वक शिव पूजा, जलाभिषेक, रुद्राभिषेक, मंत्र जाप, दान-पुण्य और सात्विक जीवन अपनाकर भक्त आध्यात्मिक शांति तथा सकारात्मक ऊर्जा की अनुभूति कर सकते हैं।

भगवान भोलेनाथ का संदेश केवल पूजा तक सीमित नहीं है, बल्कि सरलता, करुणा, समानता, प्रकृति संरक्षण और लोककल्याण की भावना को अपनाने का भी है।
यही कारण है कि श्रावण मास आज भी करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था, विश्वास और भक्ति का सबसे बड़ा पर्व बना हुआ है।
कहते हैं कि श्रावण मास में महादेव की विशेष कृपा अपने भक्तों पर बरसती है।

मिथिलांचल में मधुश्रावणी: नवविवाहिताओं के सौभाग्य, प्रेम और परंपरा का अनूठा पर्व

श्रावण मास की हरियाली और भगवान शिव की आराधना के बीच मिथिलांचल में एक ऐसा लोकपर्व मनाया जाता है, जो नवविवाहिताओं के जीवन में विशेष महत्व रखता है। इस पर्व का नाम है मधुश्रावणी। यह केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि मिथिला की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पारिवारिक परंपरा और वैवाहिक जीवन की मधुर शुरुआत का प्रतीक है। बिहार के मिथिलांचल के साथ-साथ नेपाल के तराई क्षेत्र में भी इस पर्व को अत्यंत श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया जाता है।
मधुश्रावणी पर्व मुख्य रूप से उन महिलाओं के लिए होता है जिनका विवाह उसी वर्ष हुआ हो। विवाह के बाद पहला श्रावण नवविवाहिता अपने मायके में रहकर इस पर्व को मनाती है। यह परंपरा पीढ़ियों से चली आ रही है और आज भी मिथिला समाज में इसकी विशेष मान्यता है।
पर्व के दौरान नवविवाहिता प्रतिदिन भगवान शिव, माता पार्वती, नाग देवता और गौरी की पूजा-अर्चना करती है। मान्यता है कि इस व्रत और पूजा से पति की दीर्घायु, दांपत्य जीवन में सुख-समृद्धि तथा परिवार में खुशहाली बनी रहती है। पूजा के साथ-साथ लोकगीतों और पारंपरिक कथाओं का भी विशेष महत्व होता है।
मधुश्रावणी की सबसे अनूठी परंपरा लोककथाओं के श्रवण की है। प्रतिदिन महिलाओं को शिव-पार्वती विवाह, नाग देवता तथा मिथिला की लोक मान्यताओं से जुड़ी कथाएं सुनाई जाती हैं। इन कथाओं के माध्यम से नवविवाहिता को पारिवारिक जीवन, सामाजिक जिम्मेदारियों और भारतीय संस्कारों का संदेश दिया जाता है।
पूजा के दौरान घरों को आम, केले और अन्य पवित्र पत्तियों से सजाया जाता है। मिट्टी से बने नाग-नागिन, कलश और अन्य धार्मिक प्रतीकों की स्थापना की जाती है। नवविवाहिताएं पारंपरिक मैथिली वेशभूषा, लाल या पीली साड़ी, मांग में सिंदूर और हाथों में चूड़ियां धारण कर पूरे विधि-विधान से पूजा करती हैं। इस पर्व में भोजन का भी विशेष महत्व है। सात्विक भोजन, मौसमी फल, दही, चूड़ा, मखाना तथा पारंपरिक मैथिली व्यंजन प्रसाद के रूप में तैयार किए जाते हैं। कई स्थानों पर नवविवाहिताएं व्रत रखकर पूजा संपन्न करती हैं।
मधुश्रावणी पर्व का समापन विशेष अनुष्ठान के साथ होता है। अंतिम दिन नवविवाहिता के पति को मायके बुलाया जाता है। दोनों पति-पत्नी मिलकर भगवान शिव और माता पार्वती की पूजा करते हैं तथा परिवार के बड़े-बुजुर्गों से आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। इसके बाद पारंपरिक रीति-रिवाजों के साथ नवविवाहिता की विदाई होती है।
यह पर्व केवल धार्मिक अनुष्ठान तक सीमित नहीं है, बल्कि पारिवारिक संबंधों को मजबूत करने का भी माध्यम है। इस अवसर पर मायके और ससुराल के बीच उपहारों का आदान-प्रदान होता है तथा दोनों परिवारों के बीच आत्मीयता और स्नेह का संबंध और अधिक प्रगाढ़ होता है।
आधुनिक समय में भी मधुश्रावणी की परंपरा पूरी श्रद्धा के साथ निभाई जा रही है। शहरों में रहने वाले मैथिल परिवार भी अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने के लिए इस पर्व का आयोजन करते हैं। सोशल मीडिया और डिजिटल माध्यमों के जरिए भी नई पीढ़ी इस लोकपर्व की परंपराओं और महत्व से जुड़ रही है।
लोक संस्कृति के जानकारों का कहना है कि मधुश्रावणी केवल एक व्रत नहीं, बल्कि मिथिला की सामाजिक व्यवस्था, पारिवारिक मूल्यों और नारी सम्मान की जीवंत परंपरा है।

श्रावण मास में आस्था का महासंगम: देवघर के बाबा बैद्यनाथ धाम में उमड़ता है शिवभक्तों का सैलाब

श्रावण मास भगवान शिव की आराधना का सबसे पवित्र और महत्वपूर्ण समय माना जाता है। इस पूरे महीने देशभर के शिवालयों में विशेष पूजा-अर्चना होती है, लेकिन झारखंड के देवघर स्थित बाबा बैद्यनाथ धाम का महत्व सबसे अलग और विशेष है। श्रावण के आगमन के साथ ही यहां आस्था, श्रद्धा और भक्ति का ऐसा महासंगम देखने को मिलता है, जहां देश-विदेश से करोड़ों श्रद्धालु भगवान भोलेनाथ के दर्शन और जलाभिषेक के लिए पहुंचते हैं। बाबा बैद्यनाथ धाम भारत के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक माना जाता है। साथ ही इसे 51 शक्तिपीठों में भी विशेष स्थान प्राप्त है। धार्मिक मान्यता है कि यहां भगवान शिव स्वयं ज्योतिर्लिंग के रूप में विराजमान हैं और सच्चे मन से की गई पूजा तथा जलाभिषेक से भक्तों की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।
श्रावण मास में सबसे अधिक आकर्षण सुल्तानगंज से देवघर तक की लगभग 105 किलोमीटर लंबी कांवड़ यात्रा का होता है। बिहार के सुल्तानगंज में गंगा उत्तरवाहिनी होकर बहती है, जहां से श्रद्धालु पवित्र गंगाजल भरते हैं और बिना कहीं रखे पैदल यात्रा करते हुए देवघर पहुंचकर बाबा बैद्यनाथ का जलाभिषेक करते हैं। इस कठिन यात्रा के दौरान पूरा मार्ग "बोल बम", "हर-हर महादेव" और "बाबा नगरी" के जयघोष से गूंज उठता है।
श्रावण मास में देवघर की पहचान पूरी तरह बदल जाती है। शहर के हर मार्ग पर भगवा वस्त्रधारी कांवड़ियों की लंबी कतारें दिखाई देती हैं। प्रशासन की ओर से सुरक्षा, चिकित्सा, पेयजल, विश्राम स्थल, ट्रैफिक नियंत्रण और साफ-सफाई की विशेष व्यवस्था की जाती है ताकि लाखों श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े। विभिन्न सामाजिक और धार्मिक संस्थाएं भी निःशुल्क भोजन, शर्बत, दवा और विश्राम की व्यवस्था कर सेवा कार्यों में जुटी रहती हैं।
बाबा मंदिर में प्रतिदिन तड़के मंगला आरती से पूजा-अर्चना का क्रम शुरू होता है। इसके बाद श्रद्धालु घंटों कतार में खड़े होकर बाबा का जलाभिषेक करते हैं। श्रावण के प्रत्येक सोमवार का विशेष महत्व होता है और इन दिनों श्रद्धालुओं की संख्या सामान्य दिनों की तुलना में कई गुना बढ़ जाती है। माना जाता है कि श्रावण सोमवार के दिन भगवान शिव की पूजा करने से सुख, समृद्धि, आरोग्य और पारिवारिक खुशहाली का आशीर्वाद प्राप्त होता है।
धार्मिक ग्रंथों के अनुसार लंका के राजा रावण ने भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए कठोर तपस्या की थी। प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उन्हें ज्योतिर्लिंग प्रदान किया, लेकिन एक शर्त रखी कि उसे कहीं भूमि पर नहीं रखना होगा। देवताओं की लीला के कारण वह ज्योतिर्लिंग देवघर में स्थापित हो गया और तभी से यह स्थान बाबा बैद्यनाथ धाम के रूप में विश्वविख्यात हो गया।

श्रावण मेले के दौरान देवघर की अर्थव्यवस्था को भी बड़ा सहारा मिलता है। होटल, धर्मशाला, परिवहन, स्थानीय बाजार, प्रसाद विक्रेता, फूल-माला, पूजा सामग्री और हस्तशिल्प से जुड़े हजारों लोगों को रोजगार मिलता है। स्थानीय व्यापारियों के लिए यह समय पूरे वर्ष के सबसे महत्वपूर्ण व्यापारिक अवसरों में से एक होता है।
श्रद्धालु केवल जलाभिषेक ही नहीं करते, बल्कि रुद्राभिषेक, महामृत्युंजय जाप, शिव चालीसा, शिव महिम्न स्तोत्र और अन्य धार्मिक अनुष्ठानों में भी भाग लेते हैं। अनेक भक्त परिवार की सुख-समृद्धि, स्वास्थ्य, संतान प्राप्ति, रोजगार और जीवन की सफलता की कामना लेकर बाबा के दरबार में पहुंचते हैं। मान्यता है कि बाबा बैद्यनाथ अपने भक्तों की सच्ची प्रार्थना अवश्य सुनते हैं। देवघर आने वाले श्रद्धालुओं में युवा, बुजुर्ग, महिलाएं और बच्चे सभी शामिल होते हैं। कई श्रद्धालु नंगे पैर पूरी यात्रा करते हैं, जबकि कुछ "डाक बम" के रूप में बिना रुके दौड़ते हुए सुल्तानगंज से देवघर पहुंचते हैं। उनकी आस्था और समर्पण श्रावण मेले को अद्भुत आध्यात्मिक स्वरूप प्रदान करता है।
श्रावण मास के दौरान पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छता को लेकर भी विशेष अभियान चलाए जाते हैं। प्रशासन और स्वयंसेवी संगठन श्रद्धालुओं से प्लास्टिक का उपयोग कम करने, स्वच्छता बनाए रखने और धार्मिक स्थलों की पवित्रता बनाए रखने की अपील करते हैं।
देवघर का बाबा बैद्यनाथ धाम केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, आस्था और सनातन परंपरा का जीवंत प्रतीक है। हर वर्ष श्रावण मास में यहां उमड़ने वाली श्रद्धालुओं की भीड़ यह संदेश देती है कि भगवान शिव के प्रति लोगों की श्रद्धा आज भी उतनी ही अटूट है जितनी सदियों पहले थी।
श्रावण का यह पावन महीना भक्ति, सेवा, त्याग और आध्यात्मिक चेतना का पर्व है। बाबा बैद्यनाथ धाम में गूंजते "बोल बम" और "हर-हर महादेव" के जयघोष पूरे वातावरण को शिवमय बना देते हैं। यही कारण है कि देवघर का श्रावणी मेला केवल झारखंड ही नहीं, बल्कि पूरे भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत का एक अद्भुत उत्सव माना जाता है।

देवघर बैद्यनाथ धाम से जुड़ी प्रमुख पौराणिक कथाएँ

देवघर (झारखंड) स्थित बाबा बैद्यनाथ धाम भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक माना जाता है। यह स्थान शक्तिपीठ भी है, इसलिए इसका धार्मिक महत्व और बढ़ जाता है। बैद्यनाथ धाम से कई प्रसिद्ध पौराणिक कथाएँ जुड़ी हैं।

रावण और शिवलिंग की कथा (सबसे प्रसिद्ध)

लंका के राजा रावण भगवान शिव के परम भक्त थे। उन्होंने भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए कठोर तपस्या की। जब शिव प्रसन्न नहीं हुए, तो रावण ने अपने दस सिर एक-एक करके अर्पित करने शुरू कर दिए। नौ सिर चढ़ाने के बाद जब वह दसवाँ सिर भी अर्पित करने लगे, तब भगवान शिव प्रकट हुए।
शिव ने रावण के सभी सिर पुनः जोड़ दिए। क्योंकि उन्होंने वैद्य (चिकित्सक) की तरह रावण का उपचार किया, इसलिए वे "बैद्यनाथ" कहलाए।
रावण ने शिव से प्रार्थना की कि वे लंका चलें। भगवान शिव ने उसे एक शिवलिंग दिया और कहा कि इसे रास्ते में कहीं भी धरती पर मत रखना, अन्यथा यह वहीं स्थापित हो जाएगा।
देवताओं ने रावण को रोकने की योजना बनाई। मार्ग में रावण को लघुशंका की आवश्यकता हुई। उसने एक ग्वाले (कुछ कथाओं में भगवान विष्णु के रूप) को शिवलिंग पकड़ाया। ग्वाले ने कुछ देर बाद शिवलिंग भूमि पर रख दिया। लौटकर रावण ने उसे उठाने की बहुत कोशिश की, लेकिन वह नहीं उठा। यही शिवलिंग आज देवघर में बाबा बैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग के रूप में प्रतिष्ठित है।

बैजू भक्त की कथा

एक अन्य मान्यता के अनुसार, देवघर के जंगलों में रहने वाला बैजू नाम का एक सरल और निष्कपट भक्त प्रतिदिन भगवान शिव की पूजा करता था। उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उसे दर्शन दिए और वरदान दिया कि इस स्थान पर उनकी पूजा पहले बैजू के नाम से होगी। इसी कारण इस धाम का नाम बैजूनाथ और बाद में बैद्यनाथ प्रसिद्ध हुआ।

शक्तिपीठ की कथा

पौराणिक मान्यता के अनुसार, जब माता सती ने अपने पिता दक्ष के यज्ञ में आत्मदाह किया, तब भगवान शिव उनके शरीर को लेकर तांडव करने लगे। तब भगवान विष्णु ने सुदर्शन चक्र से सती के शरीर के अनेक टुकड़े किए। जहाँ-जहाँ उनके अंग गिरे, वहाँ शक्तिपीठ बने।
देवघर में माता सती का हृदय (हृदय-देश) गिरा था। इसलिए बैद्यनाथ धाम को शक्तिपीठ भी माना जाता है। यहाँ भगवान शिव के साथ माता पार्वती (जयदुर्गा) की भी पूजा होती है।

श्रावणी कांवड़ यात्रा की परंपरा

मान्यता है कि रावण ने भगवान शिव का जलाभिषेक गंगाजल से किया था। उसी परंपरा के अनुसार आज भी श्रद्धालु बिहार के सुल्तानगंज से गंगाजल लेकर लगभग 105 किलोमीटर पैदल चलकर देवघर पहुँचते हैं और बाबा बैद्यनाथ का जलाभिषेक करते हैं। इसे विश्व की सबसे बड़ी कांवड़ यात्राओं में से एक माना जाता है।

धार्मिक महत्व

12 ज्योतिर्लिंगों में प्रमुख स्थान।
51/52 शक्तिपीठों में से एक।
श्रावण मास में लाखों श्रद्धालु जलाभिषेक के लिए पहुँचते हैं।
ऐसी मान्यता है कि यहाँ सच्चे मन से की गई प्रार्थना भगवान शिव अवश्य स्वीकार करते हैं।

इस प्रकार, देवघर का बाबा बैद्यनाथ धाम शिवभक्ति, रावण की तपस्या, बैजू भक्त की निष्काम भक्ति और माता सती के शक्तिपीठ— इन सभी पौराणिक परंपराओं का अद्वितीय संगम माना जाता है।

रामनवमी की तर्ज पर निकलेगी भव्य कांवड़ यात्रा

सौरव कुमार झा: हावड़ा, पश्चिम बंगाल के हावड़ा में श्रावण माह के प्रथम सोमवार, 3 अगस्त को रामनवमी की तर्ज पर भगवान भोलेनाथ की भव्य सनातन कांवड़ यात्रा निकाली जाएगी। सनातन युवा संघ की ओर से आयोजित यह यात्रा हावड़ा के हासकाली पुल से शुरू होकर कोलकाता के प्रसिद्ध भूतनाथ मंदिर तक जाएगी। आयोजन को लेकर तैयारियां शुरू कर दी गई हैं।

संस्था के अध्यक्ष प्रमोद दुबे और कार्यक्रम के संयोजक सूरज वर्मा ने संवाददाता सम्मेलन में बताया कि कांवड़ यात्रा के लिए ऑनलाइन पंजीकरण शुरू कर दिया गया है। अब तक करीब 1,000 श्रद्धालु अपना पंजीकरण करा चुके हैं। उन्होंने कहा कि जो भी श्रद्धालु इस यात्रा में शामिल होना चाहते हैं, उनका स्वागत है। संस्था की ओर से सभी कांवड़ यात्रियों को निःशुल्क पोशाक, कांवड़ और जल ले जाने की व्यवस्था उपलब्ध कराई जाएगी।

उन्होंने बताया कि यात्रा में भगवान भोलेनाथ की आकर्षक झांकियां, ढोल-नगाड़े और भक्ति संगीत शामिल रहेगा। श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए मार्ग में जगह-जगह सेवा शिविर, मेडिकल कैंप तथा पेयजल व अन्य आवश्यक सुविधाओं की व्यवस्था की जाएगी। इस वर्ष यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं पर फूलों की वर्षा करने की भी तैयारी की जा रही है।

सरकार परिवर्तन के बाद रामनवमी की तर्ज पर भव्य कांवड़ यात्रा के आयोजन संबंधी सवाल पर प्रमोद दुबे ने कहा कि कांवड़ यात्रा पिछले कई वर्षों से निकाली जाती रही है, लेकिन पूर्ववर्ती सरकार के समय विभिन्न कठिनाइयों के कारण इसे बड़े स्तर पर आयोजित करना संभव नहीं हो पाता था। उनके अनुसार, इस बार परिस्थितियां अनुकूल होने के कारण यात्रा को भव्य स्वरूप दिया जा रहा है और इसमें हजारों शिवभक्तों के शामिल होने की उम्मीद है।

महियाड़ी में महिलाओं की पहल पर स्वैच्छिक रक्तदान शिविर

देबाशीष गुच्छैत: हावड़ा, समाजसेवा में महिलाओं की भूमिका केवल परिवार और घर-गृहस्थी तक सीमित नहीं है, इसका एक और उदाहरण रविवार को हावड़ा के सांकराइल स्थित महियाड़ी-1 ग्राम पंचायत में देखने को मिला। महियाड़ी-1 ग्राम पंचायत के खाटिर बाजार स्थित यशोदा भवन में महिलाओं की पहल पर एक स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस मानवीय पहल की क्षेत्र के लोगों ने सराहना की।

आयोजकों में शामिल काकली नस्कर ने बताया कि करीब तीन वर्ष पहले आठ महिलाओं ने समाजसेवा के उद्देश्य से एकजुट होकर काम शुरू किया था। इसके बाद से वे वृक्षारोपण, जरूरतमंद बच्चों को कपड़े और खाद्य सामग्री वितरण सहित कई सामाजिक कार्यों में सक्रिय हैं। उनके प्रयासों से प्रेरित होकर संगठन से जुड़ने वालों की संख्या लगातार बढ़ती गई। बाद में संगठन का नाम "महियाड़ी पाथेय वूमेन वेलफेयर एसोसिएशन" रखा गया। इसी संगठन के बैनर तले इस वर्ष 70 यूनिट रक्त संग्रह के लक्ष्य के साथ रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। काकली नस्कर ने बताया कि यह लगातार तीसरा वर्ष है जब संगठन रक्तदान शिविर का आयोजन कर रहा है।

कार्यक्रम में प्रमुख समाजसेवी सुब्रत राय, महियाड़ी-1 ग्राम पंचायत की प्रधान मंगला राय, सुब्रत बाग सहित क्षेत्र के कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे। समाजसेवी सुब्रत राय ने कहा कि उनका भी एक स्वयंसेवी संगठन है, जो पूरे वर्ष समाज कल्याण के कार्य करता है। उन्होंने महिलाओं की इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि भविष्य में किसी भी सामाजिक कार्य में आवश्यकता पड़ने पर वे हरसंभव सहयोग करेंगे।

सुब्रत बाग ने कहा, "जो महिलाएं परिवार की जिम्मेदारियों के साथ-साथ समाजसेवा जैसे महान कार्यों से भी जुड़ी हैं, उनका यह प्रयास वास्तव में प्रशंसनीय है। रक्त का महत्व वही समझ सकता है, जिसने अस्पताल में किसी अपने की जान बचाने के लिए रक्त की तलाश की हो। इसलिए स्वैच्छिक रक्तदान निःसंदेह एक महान मानवीय सेवा है।"

स्थानीय लोगों का मानना है कि समाज के कल्याण के लिए महिलाओं की यह पहल केवल एक रक्तदान शिविर तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी और मानव सेवा का एक प्रेरणादायक उदाहरण भी है।

हरियाली साथी के द्वारा पौधरोपण और डिजिटल निगरानी पर जोर

शमीम अहमद: हावड़ा, पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से कार्यरत सामाजिक संस्था हरियाली साथी की एक महत्वपूर्ण बैठक हावड़ा में आयोजित की गई। बैठक में पौधरोपण अभियान को अधिक प्रभावी बनाने तथा तकनीक के माध्यम से पौधों की निगरानी सुनिश्चित करने पर विस्तृत चर्चा हुई।

बैठक में संस्था के सदस्यों ने शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में पौधरोपण के लिए अलग-अलग प्रोटोकॉल तय करने तथा लगाए गए पौधों की नियमित निगरानी की व्यवस्था विकसित करने पर बल दिया। राजकुमार गुप्ता ने पौधों के संरक्षण के लिए व्यवस्थित मॉनिटरिंग सिस्टम की आवश्यकता बताई।

अजय प्रसाद ने स्कूलों में ग्रीन जोन विकसित करने, प्रत्येक माह पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित करने तथा पेड़ों पर क्यूआर कोड लगाने का प्रस्ताव रखा, ताकि उनकी देखरेख और जानकारी आसानी से उपलब्ध हो सके।

संस्था के आईटी प्रमुख संदीप गुप्ता ने पेड़ों की डिजिटल ट्रैकिंग के लिए एक विशेष मोबाइल ऐप और यूनिक आईडी सिस्टम विकसित करने की जानकारी दी। वहीं, विनय कुमार ने डिजिटल व्यवस्था के साथ-साथ मैनुअल रिकॉर्ड रखने की आवश्यकता पर भी जोर दिया।

संदीप उपाध्याय (उर्फ डीएम) ने ग्रामीण क्षेत्रों के उन स्कूलों को चिन्हित करने का सुझाव दिया, जहां हरियाली बढ़ाने के लिए पर्याप्त भूमि उपलब्ध है। बैठक में विनोद कुमार राउत ने अधिक ऑक्सीजन देने वाले पौधों को प्राथमिकता देने की बात कही, जबकि अमित जायसवाल ने संस्था की गतिविधियों को निरंतर जारी रखने के लिए हर महीने कम से कम एक कार्यक्रम आयोजित करने का संकल्प लिया। संगठन के सदस्य संदीप त्रिपाठी ने पर्यावरण संरक्षण के इस अभियान में हरसंभव सहयोग का भरोसा दिलाया।

कल्याण का दावा: 2029 में न मोदी PM , न BJP सत्ता में होगी

आसनसोल, 21 जुलाई की तृणमूल कांग्रेस की शहीद दिवस रैली की तैयारियों को लेकर आसनसोल के टाहा लेन स्थित पार्टी कार्यालय में आयोजित बैठक में पहुंचे तृणमूल कांग्रेस सांसद कल्याण बनर्जी ने केंद्र की भाजपा सरकार और पश्चिम बंगाल में भाजपा नेतृत्व पर तीखा हमला बोला।

मीडिया से बातचीत में कल्याण बनर्जी ने दावा किया कि पूरे देश में भाजपा के खिलाफ माहौल बन चुका है और 2029 के लोकसभा चुनाव के बाद नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री नहीं रहेंगे और न ही भाजपा सत्ता में होगी। उन्होंने आरोप लगाया कि देश में लोकतंत्र को कमजोर किया जा रहा है, विपक्ष की आवाज दबाई जा रही है और लोकतांत्रिक संस्थाओं पर दबाव बनाया जा रहा है। उनके मुताबिक, देश की जनता इसका जवाब देगी।

उन्होंने कहा कि भाजपा की राजनीति का एकमात्र उद्देश्य विपक्ष को कमजोर करना और विपक्षी दलों के सांसदों को अपने साथ जोड़कर अपने मनमाफिक विधेयक पारित कराना है। हालांकि उनका दावा था कि आने वाले समय में भाजपा ऐसा नहीं कर पाएगी। पश्चिम बंगाल की कानून-व्यवस्था पर निशाना साधते हुए कल्याण बनर्जी ने आरोप लगाया कि राज्य में भाजपा नहीं, बल्कि पुलिस भाजपा का संगठन चला रही है। उन्होंने कहा कि तृणमूल कार्यकर्ताओं और नेताओं को पुलिस के जरिए डराया-धमकाया जा रहा है, लेकिन पार्टी जनता के साथ आगे बढ़ती रहेगी।

दल छोड़कर भाजपा में शामिल हुए नेताओं पर भी उन्होंने हमला बोला। उन्होंने कहा कि तृणमूल छोड़कर जाने वाले नेताओं को जनता और पार्टी कार्यकर्ता स्वीकार नहीं कर रहे हैं। उनके अनुसार, ये नेता अपने-अपने क्षेत्रों में खुलकर नहीं घूम पा रहे हैं और न ही कार्यकर्ताओं की बैठकें कर पा रहे हैं।

कल्याण बनर्जी ने आरोप लगाया कि पश्चिम बंगाल में शुभेंदु अधिकारी की एक "बी-टीम" तैयार की जा रही है, जिसमें तृणमूल से गए ऐसे लोगों को जगह दी जा रही है जिन पर पहले भ्रष्टाचार और अन्य आरोप लगते रहे हैं। उन्होंने व्यंग्य करते हुए कहा कि ऐसे नेताओं को भाजपा में शामिल किए जाने से उन्हें कोई आपत्ति नहीं, बल्कि खुशी है। भाजपा में तृणमूल कांग्रेस नेताओं को शामिल किये जाने पर भाजपा के प्रदेश नेतृत्व को लेकर भी उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि पार्टी के भीतर ही अलग-अलग नेताओं के बयान विरोधाभासी हैं। उन्होंने भाजपा के पुराने कार्यकर्ताओं से अपील की कि वे अपने राजनीतिक स्थान को उन नेताओं के लिए न छोड़ें जो चुनाव के बाद तृणमूल छोड़कर भाजपा में शामिल हुए हैं।

अंधराठाढ़ी मंदिर में चोरी के बाद श्रद्धालु ने भेंट किए स्वर्ण नेत्र व रजत मुकुट

रितेश कुमार राय: मधुबनी, अंधराठाढ़ी स्थित प्रसिद्ध शक्तिपीठ मां परमेश्वरी मंदिर (मैयो स्थान) में हाल ही में हुई चोरी की घटना के बाद श्रद्धालुओं में व्याप्त मायूसी के बीच समाजसेवी राजीव कुमार ने सराहनीय पहल करते हुए माता परमेश्वरी को चांदी का नया मुकुट और चांदी की आंख भेंट की। इसके साथ ही मंदिर में स्थापित प्रतिमा का दिव्य स्वरूप पुनः पूर्ववत हो गया।

गौरतलब है कि कुछ दिन पहले अज्ञात चोरों ने मंदिर के मुख्य द्वार का ताला तोड़कर लाखों रुपये मूल्य के आभूषण एवं नकदी की चोरी कर ली थी। चोरी के दौरान मंदिर परिसर में स्थापित मां काली की प्रतिमा से भी मुकुट और आंख निकाल ली गई थी। इस घटना से श्रद्धालुओं की धार्मिक भावनाएं आहत हुईं और क्षेत्र में व्यापक आक्रोश देखने को मिला। विरोध स्वरूप ग्रामीणों ने सड़क जाम कर प्रदर्शन भी किया था।

चोरी के बाद माता की प्रतिमा का बदला हुआ स्वरूप श्रद्धालुओं को लगातार व्यथित कर रहा था। इसी बीच तुलापटगंज संग्राम बाजार स्थित गंगा प्रसाद ज्वेलर्स तथा गंगा महादेव ज्वेलर्स, अंधराठाढ़ी के प्रोपराइटर एवं समाजसेवी राजीव कुमार ने श्रद्धालुओं की भावनाओं का सम्मान करते हुए माता परमेश्वरी को चांदी की नई आंख और मुकुट अर्पित किया।

मुकुट और आंख स्थापित होने के बाद माता परमेश्वरी की प्रतिमा फिर से अपने दिव्य और आकर्षक स्वरूप में दिखाई देने लगी। मंदिर पहुंचे श्रद्धालुओं ने माता के पुनः सुसज्जित स्वरूप के दर्शन कर प्रसन्नता व्यक्त की और राजीव कुमार के इस धार्मिक एवं सामाजिक योगदान की सराहना की।

स्थानीय लोगों ने बताया कि राजीव कुमार लंबे समय से मंदिरों के विकास, धार्मिक आयोजनों और जरूरतमंदों की सहायता के कार्यों में सक्रिय रूप से सहयोग करते रहे हैं। श्रद्धालुओं ने माता परमेश्वरी एवं मां काली से प्रार्थना की कि उनकी कृपा राजीव कुमार पर बनी रहे और वे आगे भी समाजसेवा एवं धर्मकार्य में इसी प्रकार योगदान देते रहें।

अंधराठाढ़ी: कुछ दिन पूर्व प्रसिद्ध मां परमेश्वरी शक्तिपीठ मंदिर में हुई आभूषण चोरी की घटना के बाद श्रद्धालुओं की आस्था और भक्ति का अनूठा उदाहरण देखने को मिला। अंधराठाढ़ी बाजार स्थित कृष्णा ज्वेलर्स के प्रोपराइटर उग्नेश्वर ठाकुर ने मां काली को स्वर्ण (सोने) के नेत्र और रजत (चाँदी) का मुकुट भेंट किया।

ज्ञात हो कि हाल ही में मंदिर परिसर में अज्ञात चोरों ने मां परमेश्वरी और मां काली के आभूषणों की चोरी कर ली थी। इस घटना के बाद श्रद्धालुओं में गहरा आक्रोश और दुख था।

आभूषण अर्पित करने के दौरान उग्नेश्वर ठाकुर ने कहा कि मां जगदंबा की असीम कृपा समस्त ग्रामवासियों पर बनी रहे तथा सभी के जीवन में सुख, शांति और समृद्धि का वास हो। मंदिर परिसर में इस अवसर पर श्रद्धालुओं की उपस्थिति रही और सभी ने मां के प्रति अपनी अटूट आस्था व्यक्त की।

बारुईपुर मुठभेड़ की जांच में जुटी सीआइडी, फोरेंसिक टीम ने घटनास्थल से नमूने जुटाए

सोनू कुमार झा: कोलकाता, बंगाल के दक्षिण 24 परगना के बारुईपुर में नाबालिग से दुष्कर्म और हत्या के मामले के मुख्य आरोपितों में शामिल प्रभास मंडल की पुलिस मुठभेड़ में मौत की जांच अब सीआइडी ने तेज कर दी है। राज्य फोरेंसिक साइंस लैब की टीम ने सूर्यपुर स्थित घटनास्थल का निरीक्षण कर विभिन्न नमूने एकत्र किए।

फोरेंसिक टीम के एक अधिकारी ने बताया कि घटनास्थल से जुटाए गए नमूनों को जांच के लिए प्रयोगशाला भेजा जाएगा। पुलिस के अनुसार, रात करीब पौने एक बजे अपराध के सीन रीक्रिएशन के लिए प्रभास मंडल को घटनास्थल ले जाया गया था। इसी दौरान उसने कथित रूप से कैनिंग पुलिस सर्कल के प्रभारी रौनी सरकार की कमर से सर्विस रिवाल्वर छीनकर भागने की कोशिश की और पुलिस पर एक राउंड गोली चलाई। इसके बाद आत्मरक्षा में बारुईपुर थाना के पुलिस सर्कल प्रभारी अर्घ्य मंडल ने गोली चलाई, जिससे प्रभास घायल हो गया। उसे बारुईपुर महकमा अस्पताल ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया।

मुठभेड़ के बाद नियमानुसार न्यायिक जांच शुरू की गई। बाद में पूरे मामले की जांच सीआइडी को सौंप दी गई। जांच एजेंसी मुठभेड़ में इस्तेमाल रिवाल्वर को अपने कब्जे में लेकर उसकी भी जांच करा रही है। सूत्रों के अनुसार, फोरेंसिक रिपोर्ट और अन्य साक्ष्यों के आधार पर जांच की अगली दिशा तय की जाएगी।

हिंसा में तीन और गिरफ्तार, अब तक 38 आरोपित पकड़े गए

नाबालिग से दुष्कर्म और हत्या मामले के बाद हुई हिंसा तथा सरकारी संपत्ति को नुकसान पहुंचाने के मामले में पुलिस ने तीन और आरोपितों को गिरफ्तार किया है। शुक्रवार देर रात बारुईपुर जिला पुलिस, एसटीएफ और स्पेशल आपरेशन ग्रुप की संयुक्त कार्रवाई में इनकी गिरफ्तारी हुई। इसके साथ ही इस मामले में गिरफ्तार आरोपितों की संख्या बढ़कर 38 हो गई है।

इस बीच मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने शनिवार को सूर्यपुर हाट के पास नव निर्मित पुलिस चौकी का उद्घाटन किया। इस चौकी में आउटपोस्ट प्रभारी के लिए अलग कक्ष, शिकायत दर्ज कराने की व्यवस्था, महिला पुलिस अधिकारी की नियमित तैनाती, लाकअप तथा रिजर्व फोर्स के ठहरने की विशेष व्यवस्था की गई है। पीड़ित परिवार की मांग पर मुख्यमंत्री ने हाल ही में इस चौकी के निर्माण की घोषणा की थी।

मुख्यमंत्री ने दौरे के दौरान दुष्कर्म पीड़िता के स्वजन और भीड़ की पिटाई में मारे गए इंद्रजीत मंडल के परिवार से भी मुलाकात की। प्रशासन ने इंद्रजीत मंडल के घर की मरम्मत भी कराई है और वहां कई सीसीटीवी कैमरे लगाए हैं। इन कैमरों की निगरानी सीधे बारुईपुर थाना से की जाएगी। मुख्यमंत्री ने फूलतला में हत्या के शिकार किशोर प्रसेनजीत विश्वास के परिवार से भी मुलाकात की। इसके लिए परिवार को बारुईपुर पुलिस अधीक्षक कार्यालय बुलाया गया था।

हावड़ा जिला कांग्रेस लॉयर्स सेल का प्रदर्शन

बारुईपुर में नाबालिग बच्ची के साथ हुए कथित जघन्य दुष्कर्म और हत्या की घटना के विरोध में शुक्रवार को हावड़ा जिला कांग्रेस लॉयर्स सेल की ओर से विरोध प्रदर्शन आयोजित किया गया। प्रदर्शन के दौरान दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा देने और पीड़िता को न्याय दिलाने की मांग उठाई गई।

यह विरोध प्रदर्शन न्यू ज्युडिशियल कॉम्प्लेक्स बिल्डिंग, हावड़ा कोर्ट परिसर में आयोजित किया गया। प्रदर्शनकारियों ने घटना की निष्पक्ष जांच और त्वरित न्याय सुनिश्चित करने की मांग करते हुए #JusticeForBaruipur का आह्वान किया।

स्वत्वाधिकारी 'बात हिन्दुस्तान की' (पाक्षिक) पेपर के लिए मुद्रक व प्रकाशक श्रीमती सोनी कुमारी झा, 23 रामकुमार गांगुली लेन, 2रा तल्ला कमरा नं. 203, पोस्ट- बी, गार्डेन, शिवपुर, हावड़ा-711103 (प. बंगाल) फोन नं.: 8902221434 से प्रकाशित एवं एल.एस पब्लिकेशन्स प्रा. लि.4, कैनल वेस्ट रोड, कोलकाता -700015 से मुदित, सम्पादक- वैद्यनाथ झा, फोन-9798848926 पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के उत्तरदायी, ईमेल/वेबसाईट - www.baathindustanki@gmail.com
(Owner, Printer & Publisher of 'Baat Hindustan ki' Smt. Soni Kumari Jha, 223, Ramkumar Ganguly Lane, 2nd floor, room no-203, PO_R.Garden, Shibpur, Howrah-711103, Mo. 9798848926 & Printed from L.S. publication private limited.4 no, canel west road, Kolkata 700015, Editor: Baidyanath Jha Mo. 9798848926, Email/Website: www.baathindustanki@gmail.com